सर्वोदय दर्शन में महात्मा गाँधी एवं विनोबा भावे

डॉ. भावना त्रिवेदी*

किसी भी राष्ट्र के भाग्य का निर्धारण करने वाली, राष्ट्र के वर्तमान तथा भविष्य को दिशा देने वाली 'राजनीति' क्या और कैसी हो? राजनीति को किस प्रकार एक ऐसे सशक्त साधन के रूप में विकसित किया जाय जिसका ध्येय सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय हो? ऐसे क्या उपाय किये जायें कि शासन-प्रशासन सद्गुणी, विवेकवान तथा कर्तव्यनिष्ठ शासकों द्वारा संचालित हो सके? प्राचीन काल से ही यह प्रश्न सामाजिक-राजनीतिक चिन्तकों, दार्शनिकों, मनीषियों तथा विचारकों के लिए गंभीर चिन्तन का विषय रहे हैं। युग चाहे प्राचीन हो या आधुनिक विकास के मानदण्ड देश, काल, परिस्थिति के अनुसार भले ही बदलते रहे हों, सच्चे मानव एवं मानवतावाद का विकास किसी भी स्वस्थ तथा प्रगतिशील समाज की प्रथम आवश्यक शर्त्त है।

अनादि काल से भारतीय मनीषा ने सार्वभौम कल्याण तथा सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय एवं सर्वोदय को भारतीय जीवन पद्धति, भारतीय समाज और राजनीति के उच्चतम आदर्श के रूप में स्थापित किया है। इसी क्रम में आधुनिक भारतीय सामाजिक-राजनीतिक चिन्तन परम्परा में स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, महात्मा गाँधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, महर्षि अरविन्द, एनी बेसेन्ट, भगवान दास जैसे अनेक विचारकों ने सर्वकल्याण और सर्वोदय को अपने चिन्तन का केन्द्र बनाया है।

भारतीय आत्मा के पुर्नजागरण के उषाकाल में महात्मा गाँधी का आविर्भाव 02 अक्टूबर, 1869 गुजरात के काठियावाड़ में पोरबन्दर की पवित्र भूमि पर हुआ। महात्मा गाँधी भारत के उन महान ऋषियों और

* एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिविज्ञान, ए.एम.पी.जी. कॉलेज, का.हि.वि.वि., वाराणसी।

Scanned with CamScanner

मुनियों की परम्परा की ही एक कड़ी थे जिनके जीवन एवं कृतित्व ने भारतीय जनमानस को मार्गदर्शन प्रदान किया है। वे प्लेटो, अरस्तू, हाब्स तथा हीगल जैसे राजनीतिक दार्शनिक नहीं थे और न ही क्रमबद्ध और व्यवस्थित चिंतक बल्कि वे मूलतः आध्यात्मिक भावना से अनुप्रणित होकर जनकल्याण के लिए अनवरत कार्य करने वाले कर्मयोगी थे।

आधुनिक भारतीय मनीषा के अग्रदूत मोहनदास करमचन्द गाँधी के जीवन तथा विचारों को देखें तो वे स्पष्ट तौर पर सत्य और अहिंसा पर आधारित अन्तःचेतना की राजीनति के पुरोधा के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। महात्मा गाँधी का सम्पूर्ण जीवन मूल्यों की साधना एवं समाज तथा राजनीति में मूल्यों के सफल प्रयोग में बीता है। उनका स्पष्ट आग्रह था कि राजनीति का आधार धर्म होना चाहिए। धर्म जो व्यक्ति को शरीर से मन, मन से चेतना और चेतना से अन्तःचेतना की यात्रा की तरफ ले जाता है। धर्म जो व्यक्ति को स्वयं से, व्यक्ति का व्यक्ति से तथा व्यक्ति को समाज, राष्ट्र और विश्व से जोड़ता है। धर्म जो व्यक्ति के उदात्तीकरण एवं रूपांतरण का सशक्त माध्यम है। उनका दृढ़ विश्वास था कि राजनीति में धर्म का प्रवेश निश्चय ही राजनीति को ऊपर उठाकर निःस्वार्थ लोकसेवा तथा लोककल्याण और नैतिकता के स्तर पर स्थापित करेगा एवं राजनीति सत्य तथा न्याय की दिशा में अग्रसर होगी। उन्होंने स्पष्ट घोषित किया कि 'मेरे लिए मोक्ष का एक मात्र मार्ग यही है कि मैं देश तथा मानवजाति की सेवा के लिए निरन्तर परिश्रम करूं। मैं हर जीवित प्राणी के साथ अपना एकात्म्य स्थापित करना चाहता हूँ। अतः मेरे लिए मेरी देशभक्ति, शाश्वत स्वतंत्रता तथा शांति के लोक की यात्रा की एक मंजिल है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मेरे लिए धर्म से शून्य राजनीति नहीं हो सकती। राजनीति धर्म के अधीन है। धर्म से शून्य राजनीति मृत्युजाल है, क्योंकि उससे हमारी आत्मा का हनन होता है।'

आत्मा की श्रेष्ठता में विश्वास करने वाले महात्मा गाँधी कभी ऐसे किसी कानून को मानने के पक्षधर नहीं थे जो व्यक्ति की नैतिक गरिमा के प्रतिकूल हो। उनके लिए आत्मा अथवा अन्तःकरण की

Scanned with CamScanner

आवाज ही सर्वोपरि है। उनका स्पष्ट विचार था कि यदि राज्य द्वारा निर्मित कानून व्यक्ति की उच्चतर कर्त्तव्य भावना तथा नैतिक विकास के विरूद्ध हो तो उसका प्रतिरोध किया जाना आवश्यक है।

महात्मा गाँधी अपनी ग्राम स्वराज्य की अवधारणा में एक ऐसा सर्वोदय समाज स्थापित करना चाहते थे जहाँ प्रत्येक व्यक्ति सशक्त हो और प्रत्येक व्यक्ति समाज के संपूर्ण विकास में अपना योगदान दे। 'सर्वोदय' अर्थात् 'सबका उदय' या 'सबका कल्याण' इस मूलधारणा पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए समाज में स्वतंत्रता और अधिक से अधिक समानता होनी चाहिये। विकास के समान अवसर प्राप्त होने की स्थिति में समाज एक सामुदायिक जीवन की ओर अग्रसर होता है और व्यक्ति के साथ-साथ साहित्य, कला, संस्कृति और विज्ञान की उन्नति होती है। 'सर्व उदय' को समर्पित गाँधी का सर्वोदय एक नवीन समाज का, सामाजिक लोकतंत्र का आधार प्रस्तुत करता है। सर्वोदय दर्शन वेदांत, बौद्धवाद, क्रिश्चैनिटी तथा समाजवाद का सम्मिश्रण है। सर्वोदय अवधारणा ईश्वर और आत्मा की शुद्धता पर आधारित है। शुद्ध आत्मा ही मनुष्य में मानवीय चेतना एवं सर्व कल्याण के प्रेरक के रूप में कार्य करती है।

गाँधी के सर्वोदय दर्शन के दो प्रधान सर्मथकों एवे संवाहकों विनोबा भावे एवं जय प्रकाश नारायण में प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक लोकनायक जय प्रकाश नारायण का विचार है कि सर्वोदय आन्दोलन मानव के हृदय परिवर्तन के सिद्धान्त पर आधारित है। ईश्वरीय अंश के रूप में मनुष्य में सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रबल संभावना है। समाज के पुनर्निर्माण के लिए व्यक्ति को संकीर्ण भौतिकवाद से ऊपर उठकर 'सद्' के मार्ग पर चलना होगा तभी सर्वोदय समाज की स्थापना हो सकेगी।

महात्मा गाँधी का सर्वोदय दर्शन भारतीय समाज की सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है। अद्वैत वेदान्त पर आधारित सर्वोदय चिंतन समाज में सत्य, अहिंसा, आत्म त्याग एवं उत्कृष्ट चरित्र जैसे उच्चतम नैतिक

Scanned with CamScanner

मूल्यों की स्थापना करता है। गाँधी के सर्वोदय पर प्रकाश डालते हुये जय प्रकाश नारायण ने कहा है कि सर्वोदय उच्चतम समाजवादी मूल्यों को अभिव्यक्त करता है। यह अवधारणा जीवन के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए पूँजीवाद तथा शक्तियों के केन्द्रीकरण का विरोध करती है। सत्य और अहिंसा पर आधारित सर्वोदय दर्शन में स्वावलम्बी ग्राम स्वराज्य की अवधारणा का समर्थन किया गया है। भूदान, सम्पत्तिदान और ग्रामदान सर्वोदय की कुछ आधारभूत प्रमुख तकनीकें है। सर्वोदय निजी सम्पत्ति का निषेध करते हुए सम्पत्ति की संरक्षकता के सिद्धान्त का समर्थन करता है।

कुछ विचारकों के अनुसार सर्वोदय दर्शन एवं साम्यवादी विचारधारा में कुछ समानताएँ पायी जाती है। उदाहरणत: दोनों ही विचारधाराएँ सामाजिक न्याय की प्रचलित अवधारणा की विरोधी हैं क्योंकि उनके अनुसार सामाजिक न्याय की वर्तमान विचारधारा द्वारा सामाजिक-आर्थिक असमानता दूर नहीं हो सकी है। गाँधी और कार्ल मार्क्स दोनों ही राज्य को शक्ति को केन्द्रीकृत रूप तथा शोषण का यंत्र मानते हैं। इसीलिए दोनों ही विचारक राज्यविहीन समाज की स्थापना करना चाहते हैं लेकिन जहाँ मार्क्स राज्यविहीन समाजवादी समाज की स्थापना के साथ ही राज्य का अस्तित्व समाप्त करना चाहते है वहीं गाँधी इस समस्या का समाधान राज्य की शक्तियों के विकेन्द्रीकरण तथा ग्राम स्वराज्य की स्थापना में देखते हैं। यहाँ भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि गाँधी ने जहाँ राज्य का विरोध नैतिक आधार पर किया है और यह माना है कि राज्य की केन्द्रीकृत शक्तियाँ व्यक्ति के नैतिक विकास में बाधक है वहीं मार्क्स शुद्ध भौतिक आधार पर सर्वहारा वर्ग के द्वारा राज्य का विरोध कराकर रक्तपात पूर्ण क्रान्ति द्वारा राज्यविहीन समाज स्थापित करना चाहते हैं।

गाँधीवाद और साम्यवाद दोनों ही विचारधाराएँ निर्धन, कमजोर और शोषित वर्गों का सम्यक उत्थान चाहती हैं लेकिन गाँधीवाद जहाँ नैतिक मूल्यों की स्थापना तथा व्यक्ति और व्यवस्था के हृदय परिवर्तन द्वारा शोषण मुक्त समाज चाहते हैं। वहीं कार्ल मार्क्स समाज में रक्तपात

Scanned with CamScanner

पूर्ण क्रान्ति तथा हिंसा के माध्यम से परिवर्तन की वकालत करते हैं। गाँधी के सर्वोदय का आधार आध्यात्मिक है जबकि साम्यवाद भौतिकवादी दर्शन है। सर्वोदय साध्य और साधन दोनों की पवित्रता में विश्वास करने वाला चिन्तन है। गाँधी आत्म नियंत्रण और आत्म त्याग को सर्वोदय की स्थापना के लिए आवश्यक मानते है। वहीं साम्यवाद साधन के तौर पर हिंसात्मक क्रान्ति का समर्थन करता है। स्पष्ट है कि सर्वोदय और साम्यवादी चिंतन में सतही तौर पर कुछ समानताएँ होते हुए भी दोनों विचारधाराओं में मूलभूत अन्तर है। साम्यवाद के चिंतन का क्षेत्र जहाँ सीमित और संकीर्ण है वहीं गाँधी ने सर्वोदय द्वारा जीवन की एक विराट दृष्टि प्रस्तुत की है।

गाँधी अपनी ग्राम स्वराज्य की अवधारणा में विकेन्द्रीकृत शक्तियों वाला समाज निर्माण चाहते हैं जहाँ की प्रत्येक इकाई स्वयं में आत्मनिर्भर, सशक्त तथा स्वावलम्बी हो। इस प्रकार गाँधी का सर्वोदय सहभागिता के लोकतंत्र की नींव रखता है जिसमें समाज के हाशिए पर खड़े आखिरी व्यक्ति की आवाज और उसकी भूमिका उतनी ही महत्त्वपूर्ण होगी जितनी कि मुख्यधारा में सहभागी प्रथम व्यक्ति की।

गाँधी के सर्वोदय चिन्तन के संवाहकों में भूदान आन्दोलन के पुरोधा आचार्य विनोबा भावे का स्थान अग्रणी है। बाल्यकाल की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् आचार्य विनोबा जी ने संस्कृत साहित्य का अध्ययन काशी में किया और यहीं उनका हृदय भारत की स्वाधीनता के लिए क्रांतिकारी कार्य करने को प्रेरित हुआ। अपने जीवन के इसी लक्ष्य को लेकर श्री विनोबा जी महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आये। आचार्य विनोबा भावे प्रथम बार सन् 1916 में गाँधी जी से मिले। इस प्रथम मुलाकात में गाँधी ने न केवल उनके बाल्यावस्था का नाम 'विनायक भावे' से बदलकर 'विनोबा भावे' रख दिया बल्कि आचार्य विनोबा का संपूर्ण व्यक्तित्त्व महात्मा गाँधी के प्रभाव में रूपान्तरित हो गया। महात्मा गाँधी की भाँति आचार्य विनोबा भी मन, वाणी और कर्म के ऐक्य की यात्रा पर चल पड़े।

सन् 1932 में श्री विनोबा जी महात्मा गाँधी के सविनय अवज्ञा

Scanned with CamScanner

आन्दोलन के सहभागी बने जिसके परिणामस्वरूप तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उन्हे जेल में डाल दिया। कारागार में विनोबा भावे जी की आत्मिक शुद्धिकरण की यात्रा अनवरत जारी रही। संपूर्ण गीता दर्शन आत्मसात् करने वाले विनोबा जी ने जेल से बाहर आने के पश्चात् अपना पूरा जीवन सभी भारतवासियों के सम्यक् उत्थान एवं भारत के ग्रामीण समाज की आर्थिक-सामाजिक दशा को सुधारने और उसके विकास में लगाया।

महापुरुषों के जीवन चरित्र का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि सभी महापुरुषों के पास विराट दृष्टि, उनकी मानव कल्याण की अदम्य लालसा तथा प्रेम और करुणा की भावना से परिपूर्ण उनका हृदय मातृवत् होता है जो उन्हें निन्तर सत्कर्म एवं सर्वोदय के लिए कर्म करने की प्रेरणा देता है। स्वामी विवेकानन्द की भाँति आर्चाय विनोबा भावे को कारुणिक हृदय भारत के ग्रामीण समाज, निर्धनों, श्रमिकों की दुर्दशा देखकर द्रवित हो उठा और उन्होंने लोगों का आह्वान करते हुये कहा कि 'गाँव में ईश्वर की पूजा के लिए जाओ। हमारा ईश्वर आज दीन-हीन है। वह नंगा और भूखा है। वह अज्ञानी और अशिक्षित है। अतः हमारे मन में जरा भी शिथिलता नहीं आनी चाहिये'। उन्होंने महात्मा गाँधी के परामर्श पर एक 'परमधाम्' आश्रम की स्थापना की और आजीवन अस्पृश्यता निवारण, आर्थिक समानता, नारी उत्थान, खादी, ग्रामोद्योग, शिक्षा, क्षेत्रीय भाषाओं का विकास, सर्वोदय समाज की स्थापना और भूदान आन्दोलन के लिए कार्य करते रहे। महात्मा गाँधी ने उनकी सत्यनिष्ठा और सतत् कर्त्तव्य परायणता से प्रभावित होकर कहा था कि 'वह आश्रम के कुछ स्तम्भों में से एक हैं, वह उन बहुत से लोगों में से नहीं जो आश्रम में आशीष पाने के लिए आते हैं बल्कि वे तो उसे उपकृत करने के लिए आये हैं। कुछ प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि देने के लिए आये हैं।'

महात्मा गाँधी के समान मानव कल्याण को समर्पित आचार्य विनोबा जी न केवल सर्वोदय सिद्धान्त की प्रतिष्ठा करते है बल्कि महात्मा गाँधी के देहावसान के पश्चात् स्वतंत्र भारत की नवीन परिस्थितियों

Scanned with CamScanner

में वे इसे क्रियान्वित करने का प्रयास भी करते हैं। इसका परिचय उनकी प्रसिद्ध कृतियों 'भूदान गंगा' 'भूदान यज्ञ' 'भूदान से ग्राम दान' 'स्वराज्य शास्त्र' इत्यादि में तथा उनके नित्यप्रति प्रार्थना में दिये जाने वाले भाषणों और अन्य लेखों में मिलता है। 'सर्वोदय दर्शन' भारत की सनातन संस्कृति की विशिष्टता रही है। आचार्य विनोबा जी ने आधुनिक युग मे 'सर्वोदय विचारधारा' को 'साम्ययोग' का नाम दिया और इसे ही भूदान का प्रमुख विचार बताया। सर्वोदय का प्राण तत्त्व है सत्य के प्रति प्रतिबद्धता, जीवन के प्रत्येक आचरण में सत्य का निष्ठापूर्वक पालन। विनोबा जी लिखते है, "सर्वोदय क्रान्ति की प्रक्रिया त्रिकोणात्मक है और यह त्रिभुज 'हृदय-परिवर्तन', 'विचार-परिवर्तन' तथा 'परिस्थिति-परिवर्तन' की तीन रेखाओं से बनता है। इसका अर्थ है कि कुछ लोग विचार समझ जाने पर अपना जीवन बदल देते हैं। इस प्रकार क्रमशः पूरा समाज बदल जाता है। सर्वोदय की मान्यता है कि वास्तविक परिवर्तन तो जीवन के मूल्यों का ही परिवर्तन है। क्रान्ति का अर्थ ही समाज और व्यक्ति के जीवन-मूल्यों में बहुत बड़ा परिवर्तन है। इस प्रकार का परिवर्तन बल-प्रयोग द्वारा नहीं वरन् धैर्य से समझ-बूझकर अपने स्वयं के जीवन को नए मूल्यों के अनुरूप ढालकर तथा उनके लिए कष्ट सहकर दूसरों को प्रभावित करके ही किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में यह परिवर्तन अहिंसा द्वारा ही हो सकता है।"

आचार्य विनोबा जी विश्व की प्रचलित विचारधाराओं पूँजीवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद और साम्यवाद को मानवता के संपूर्ण कल्याण के लिए बहुत उपयोगी नहीं मानते थे। उनका विचार था कि पूँजीवादी सिद्धान्त की यह मान्यता कि समाज में क्षमता और योग्यता को बढ़ावा देने के लिए अधिक योग्यता वाले को अधिक धन और कम योग्यता वाले को कम मिलना चाहिए इस प्रकार का विचार स्वस्थ्य समाज के विकास में सहायक नहीं है। इसी प्रकार प्रजातान्त्रिक समाजवाद जो वास्तव में 'बहुमत का शासन' होता है, अल्पमत के हितों के संरक्षण तथा समाज के विकास में उनकी पर्याप्त भागीदारी की दृष्टि से बहुत उपयुक्त नहीं है। विनोबा जी साम्यवादी विचारधारा को भी सर्वकल्याण

Scanned with CamScanner

की दृष्टि से उपयोगी नहीं मानते क्योंकि साम्यवादी विचारधारा में हिंसा के प्रयोग द्वारा सर्वहारावर्ग द्वारा सत्तारूढ़ पूँजीपति वर्ग को समाप्त करने का विचार है। किसी भी सभ्य समाज के निर्माण की नींव हिंसा एवं रक्तपात नहीं हो सकता। इसी प्रकार सर्वोदय विचारधारा उपयोगितावादी सिद्धान्त 'अधिकतम संस्था के अधिकतम सुख' के स्थान पर सभी के सार्थक उत्थान और कल्याण की समर्थक है। विनोबा जी स्पष्ट कहते है कि 'सर्वोदय कुछ या बहुतों का अधिकतम का उत्थान नहीं करता। हम अधिकतम के अधिकतम सुख से संतुष्ट नहीं है। हम तो केवल एक की और सबकी, ऊँच और नीच की, सबल और निर्बल की, बुद्धिमान और बुद्धिहीन की भलाई से ही सन्तुष्ट हो सकते हैं।'

महात्मा गाँधी और आचार्य विनोबा भावे का सर्वोदय समाज विकेन्द्रीकृत व्यवस्था पर आधारित है। उनका दृढ़ विश्वास था कि ग्रामराज्य का आदर्श तभी प्राप्त किया जा सकता है जबकि सम्पूर्ण राजनीतिक सत्ता का प्रयोग सभी ग्रामवासियों द्वारा स्वयं किया जाये तथा प्रशासन का यही सिद्धान्त जिला और प्रान्त के स्तर पर भी लागू किया जाये। इस सन्दर्भ में कुछ आलोचकों का यह मानना है कि सर्वोदय समाज का राज्य एक ऐसी शासन व्यवस्था का रूप ले सकता है जहाँ अन्य शासकीय ईकाइयों के साथ ताल-मेल स्थापित करने का कोई साधन ही न शेष बचे। इस तर्क के प्रत्युत्तर में सर्वोदय आन्दोलन के पक्ष में यह कहा जा सकता है कि 'वही सरकार सर्वोत्तम है जो सबसे कम शासन करती है। महात्मा गाँधी ने भी सर्वोदय अवधारणा पर विचार व्यक्त करते हुये स्पष्ट किया है कि इस सिद्धान्त में यथार्थ में जनशक्ति के निर्माण पर बल दिया जाता है। जय प्रकाश नारायण का विचार है कि "हमने निश्चय किया है कि हम गाँवों के चुनावों को दलों के आधार पर नहीं लड़ेंगे और जो सिद्धान्त गाँव के सम्बन्ध में सही है वही राष्ट्रीय स्तर पर भी सही है।" सर्वोदय की अवधारणा के विचारक प्रतिनिधियात्मक प्रजातंत्र में दलीय व्यवस्था के स्थान पर दल विहिन लोकतंत्र जो विशुद्ध रूप से जन उत्तरदायित्व तथा सामुदायिक सर्वसम्मति पर आधारित हो, की स्थापना करना चाहते है। स्पष्ट है कि सर्वोदय शब्द एक उत्कृष्ट और

Scanned with CamScanner

सर्वव्यापक भावना को अभिव्यक्त करता है। सर्वोदय की सफलता के लिए आचार्य विनोबा जी ने दो प्रमुख आवश्यक दशाओं का उल्लेख किया है—(1) सभी व्यक्तियों में एक दूसरे का सुख और दुःख अनुभव करने की क्षमता होनी आवश्यक है तथा (2) प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक रूप से पराश्रित न होकर स्वावलम्बी बनना होगा। इसी क्रम में 25 दिसम्बर 1975 में पवनार आश्रम में अपने विचार रखते हुये भी विनोबा जी ने सर्वोदय के पाँच आधारभूत सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला जो इस प्रकार हैं—(1) सामाजिक व्यवस्था विकेन्द्रीकरण पर आधारित हो। (2) संप्रभु शक्ति जनता में निवास करे। (3) प्रशासनिक वर्ग स्वामी भाव से नहीं बल्कि जनसेवक की भावना से कार्य करें। (4) सार्वजनिक क्षेत्र में प्रशासनिक कार्यकौशल, भ्रष्टाचार मुक्त ईमानदार व्यवस्था हो तथा (5) सर्वोदय समाज जातिरहित और वर्ग रहित समाज होगा।

श्रीमद्भगवद् गीता के 'सर्वभूतहिते रताः' के प्रबल अनुयायी आचार्य विनोबा जी महात्मा गाँधी की भाँति ही सर्वोदय की स्थापना और उसके विकास के लिए मनुष्य का शुद्धिकरण और उसमें नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश चाहते थे। सर्वोदय अवधारणा के मूल में ही सत्य, अहिंसा, प्रेम, अस्तेय, अपरिग्रह, आत्म-संयम, स्वदेशी और सर्वधर्म समभाव की भावना सन्निहित है। गाँधी और विनोबा का विचार था कि सर्वोदय विचार में आस्था रखने वाला व्यक्ति निजी जीवन में, व्यापार और व्यवसाय में, सामाजिक जीवन में और हर जगह असत्य का व्यवहार नहीं कर सकता। उनकी इच्छा थी कि राज्यशक्ति और धनशक्ति के साथ-साथ मानव शक्ति का प्रयोग भी बिना किसी असमान व्यवहार के समस्त प्राणियों की उन्नति के लिए किया जाय। वे कहा करते थे कि सर्वोदय मन एवं मानव शक्ति को सकारात्मक दिशा में ले जाने को प्राथमिकता देता है। इसमें राजा एवं रंक दोनों ही समान होगें। सभी के लिए समान दृष्टिकोण रखा जायेगा। सभी समान घाट पर पानी पियेंगे। सर्वोदय भारत की एक पवित्र नदी के समान है जो हर भूमि को समान जल से सींचना चाहती है चाहे वह ऊसर हो या उर्वरा।

Scanned with CamScanner

सर्वोदय समाज की स्थापना के लिए ही श्री विनोबा जी ने भूदान, श्रमदान और ग्रामदान की अवधारणाओं का विकास किया। सर्वोदय को मूर्त रूप प्रदान करने के उद्देश्य से आगे चलकर सर्वोदय समाज की स्थापना की गई। काका कालेलकर के नेतृत्व में सन् 1949 में "सर्वोदय आर्थिक सम्मेलन" का आयोजन किया गया तथा "सर्वोदय" पत्रिका का प्रकाशन कई भारतीय भाषाओं में प्रारम्भ हुआ।

स्वाधीन भारत में भारतीय संविधान के वर्णित समाजिक न्याय और सर्वकल्याण के संकल्पों को पूरा करने के लिए भारत सरकार द्वारा अनेकों प्रयत्न प्रारम्भ किये गये जिसमें जमीदारी प्रथा का उन्मूलन और भूति सुधार के प्रयास भी थे लेकिन भूमिहीन मजदूरों की दशा में कोई सकारात्मक सुधार नहीं हुआ। भूमि के इस असमान वितरण की समस्या के समाधान के लिए विनोबा जी ने भूदान आन्दोलन प्रारम्भ किया। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य था कि जिनके पास आवश्यकता से अधिक भूमि है वे स्वेच्छा से अपनी भूमि का कुछ भाग भूमिहीन श्रमिको को दान स्वरूप दे दें और इस प्रकार मनुष्य अपने संकीर्ण लाभ से ऊपर उठकर वृहत्तर सामाजिक कल्याण की प्रतिष्ठा करें। भूदान आन्दोलन पर प्रकाश डालते हुए जय प्रकाश नारायण ने लिखा है कि 'भूदान आन्दोलन केवल भूमि संग्रह और भूमि वितरण का भाग नहीं है। या तो संपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक तथा आर्थिक क्रान्ति की दिशा में गाँधीवादी मार्ग है। यह एक नवीन जीवन पद्धति का सिद्धान्त, व्यवहार और एक नवीन सामाजिक दर्शन है। यह एक नवीन मानवता तथा एक नवीन सभ्यता का श्री गणेश है।' भूदान आन्दोलन द्वारा श्री विनोबा जी भूमि के असमान वितरण की प्रथा को समाप्त करने के साथ ही साथ भू-स्वामियों और भूमिहीन श्रमिकों के मध्य सद्भावपूर्ण संबंध, ग्रामीण समाज को स्वावलम्बी बनाने, ग्राम राज्य की स्थापना करने, श्रम के महत्त्व को समझाने एवं आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित समाज की स्थापना करना चाहते हैं। उनका स्पष्ट विचार था कि 'एक न्यायपूर्ण समाज में भूमि सबकी सम्पत्ति अवश्य ही होनी चाहिए। इसीलिए हम दान के लिए प्रार्थना नहीं करते हैं अपितु उस भाग की माँग करते हैं

Scanned with CamScanner

जिनसे सामाजिक तथा आर्थिक कुव्यवस्था को बिना गंभीर झगड़ों के ठीक किया जा सके। इसी प्रकार ग्रामदान की अवधारणा मार्क्स के साम्यवादी सिद्धान्त और संयुक्त हिन्दू परिवार के उस आदर्श पर आधारित है जिसमें व्यक्तिगत स्वामीत्व के स्थान पर सामुहिक स्वामित्व की प्रधानता है। विनोबा जी ग्रामदान की अवधारण को स्पष्ट करते हुये बताते है कि ग्रामदान से प्राप्त किये हुए गाँव में सामुहिक खेती नहीं होती अपितु उसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता अनुसार कार्य करता है और अपनी आवश्यकतानुसार धन पाता है। उनके शब्दों में, ''शिक्षक, दस्तकार एवं किसान सभी अपने-अपने व्यवसायों का पालन करेंगे। सम्पूर्ण गाँव की वार्षिक उपज में सभी को समान हिस्सा मिलेगा सभी परस्पर आत्मीयता का अनुभव करेंगे तथा सामुहिक जीवन व्यतीत करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति अपना सब कुछ समाज को अर्पण करेगा तथा समाज उसकी देखभाल करेगा। लोग ग्रामदान को बलिदान समझते हैं। ग्रामदान बलिदान नहीं है वरन् अच्छे जीवन के लिए अच्छी लागत समान है।''

भूदान आन्दोलन में विनोबा जी सम्पत्ति दान, विद्या दान और श्रमदान को भी महत्त्वपूर्ण मानते हैं। उनका स्पष्ट मत था कि जिनके पास अथाह भूमि नहीं बल्कि अपार सम्पत्ति है उन्हें समाज के हित में अपनी सम्पत्ति का कुछ भाग दान में देना चाहिए। इसी प्रकार जिनके पास न तो सम्पत्ति है न भूमि पर वह विद्वान है उसे विद्या दान कर साक्षर और जागरूक समाज के निर्माण में अपना योगदान देना चाहिये। इसी क्रम में ऐसे व्यक्ति जिनके पास न तो सम्पत्ति है न विद्या और न भूमि ही उन्हें समाज के विकास में श्रमदान करना चाहिये। इस प्रकार विनोबा जी ने 5 करोड़ एकड़ भूमि दान में प्राप्त करने का लक्ष्य रखा जिससे कि कम से कम 1 करोड़ भूमिहान श्रमिकों की समस्या का समाधान किया जा सके। व्यवहार में यदि भूदान आन्दोलन की सफलता का अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट होता है कि भूदान आन्दोलन से 80 लाख एकड़ से अधिक भूमि प्राप्त हुयी जिसमें 40 प्रतिशत से ज्यादा भूमि बिहार से प्राप्त हुयी थी।

महात्मा गाँधी एवं विनोब भावे के सर्वोदय दर्शन के विश्लेषणात्मक

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्वाधीन भारत के संविधान ने सर्वकल्याण के जिस आदर्श को अपनाया है उसकी प्रेरणा निःसंदेह गाँधी की सर्वोदयी अवधारणा रही है। गाँधी एवं विनोबा का बहुआयामी चिन्तन ने स्वतंत्रता, समाज के प्रत्येक क्षेत्र में समानता, स्त्री शक्ति की प्रतिष्ठा, सामाजिक द्वन्द के स्थान पर सामाजिक समरसता, देशभक्ति, अस्पृश्यता विरोध, विश्वशान्ति एवं विश्व सर्वोदय दर्शन को गतिशील और क्रियात्मक बनाने में श्रेष्ठ योगदान दिया है। विनोबा जी लिखते है कि 'सर्वोदय भारत का अपना शब्द है और भारत की अपनी वस्तु है, पर ऐसा शब्द या वस्तु नहीं है जो किसी दूसरे देश या काल में लागू न हो सके। देश-काल परिस्थिति के भेदानुसार उसकी बाहरी पद्धति में अन्तर होता रहेगा लेकिन उसका आन्तरिक रूप शाश्वत रहेगा।' टैनीसन हेलम ने विनोबा जी के सम्मान में लिखा है कि 'विनोबा ईश्वर के प्रयत्न तथा लालसा रहित भावना के संदेश वाहक हैं। गाँधी को ऐसा न बन पाने का अफसोस रहा, इसलिए पहले दिन से ही बूढ़े व्यक्ति को अत्यधिक आदर भाव से अध्यापक स्वीकार कर लिया।'

सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों के इस दौर में निश्चय ही महात्मा गाँधी आज अत्यधिक प्रासंगिक हैं। संकीर्ण स्वार्थ, हिंसा, आतंकवाद, अलगाववाद, भ्रष्टाचार, सम्प्रदायवाद जैसी अनेकों गंभीर समस्याओं से ग्रस्त भारतीय सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था के लिए सत्य, अहिंसा, नैतिक मूल्यों एवं मानवतावाद के विकास तथा सर्वोदय की स्थापना पर आधारित गाँधीवाद एक प्रकाश स्तम्भ की भाँति न केवल अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है बल्कि गंभीर सामाजिक-राजनीतिक व्याधियों का समाधान भी प्रस्तुत करता है। गाँधी एवं विनोबा भावे अपनी व्यापक मानवतावादी दृष्टि और मानव सभ्यता को दिये गये अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए चिर स्मरणीय रहेंगे।

Scanned with CamScanner

संदर्भ ग्रंथ

1. मोहन दास क. गाँधी, 'Hind Swaraj or Indian Home Rule', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1909.
2. जयप्रकाश नारायण, *'A Picture of Sarvodaya Social Order'*, अखिल भारत सेवा संघ, तंजौर, 1955.
3. Acharya Vinoba Bhave, 'Swaraj Sastra', Sarva Seva Sangh Prakashan, Varanasi, 1973.
4. मोहनदास करमचन्द गाँधी, 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2012.
5. माधवी त्रिपाठी, 'गाँधी की विरासत : निरन्तरता एवं परिवर्तन', वाईकिंग बुक्स, जयपुर, 2012.
6. नारायण देसाई, 'बापू की गोद में', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2010.
7. निर्मल कुमार बोस, *'Studies in Gandhism'*, नव जीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1972.
8. जी. रंजीत शर्मा, *'An Introduction to Gandhian Thought'* Atlantic Publishers & Distributors, News Delhi, 1991.
9. मनोज सिन्हा, 'गाँधी अध्ययन', ओरियंट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, 2010.
10. Acharya Vinoba Bhave, *'Self-Reliance Ande Freedom'*, Sarva Seva Sangh Prakashan, Varanasi, 1996.
11. वी.पी. वर्मा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन', आगरा, 1998.
12. अमरेश्वर अवस्थी, रामकुमार अवस्थी, 'आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन', रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1992.

❑

Scanned with CamScanner